नवजागरणकालीन मलयालम नाटक

डॉ. अनीश के.एन. ,सह आचार्य,भारतीय भाषा केंद्र ,जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,नई दिल्ली-110067

9446426447,

aneeshkn1@gmail.com

भारतीय नवजागरण के मूल में स्वतंत्रता की भावना है। यद्यपी इसका मूल अंगूज तो भक्तिकालीन साहित्य में उपलब्ध है, फिर भी उसका पूर्ण विकास तो अंग्रेज़ी शासन तथा शिक्षा प्रणाली के माध्यम से हुआ। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से देखा जाय तो नवजागरणकालीन नाटक और रंगमंच सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि नाटक और रंगमंच जनसामान्य के बीच में हैं। अशिक्षित एवं अनपठ समाज को जाग्रत करने में और नई दृष्टि देने में नाटक और रंगमंच की भूमिका सराहनीय है। अतः सामाजिक परिवर्तन और परिवर्द्धन में नाटक और रंगमंच एक सशक्त हथियार हैं। नाटक और रंगमंच जनजीवन से जुडे हुए हैं। नाटक में जो दृश्य -श्रव्य गुण है वह पाठक को प्रभावित करने की दृष्टि में है। पाठक चाहे साक्षर हो या निरक्षर रंगमंचीयता उसे आसानी से प्रभावित करती है। इसलिए जनजीवन से नाटक का संबन्ध अटूट है। उत्पत्ति की दृष्टि से देखा जाय तो वेदों में जो यम-यमी संवाद है वहाँ नाटकीय तत्वों का समावेश है। अत: वेद और पुराणों से नाटक की उत्पत्ति कहना ठीक है। प्रारंभिक समय में नाटक में धर्म का प्रभाव तो है, लेकिन समयानुसार धर्म की पकड कम होने लगी। संस्कृत नाटकों ने विशव भर को प्रभावित किया। कालिदास, भास,भवभूति जैसे नाटककार भारतीय रंगमंच की अमिट पहचान है। इस प्रकार के नाटकों से भारतीय भाषाएँ समृद्ध हैं। यक्षगान, कूत्त, काक्करशिनाटकम, कूडियाट्टम आदि इस प्रकार के विभिन्न नाट्य रूप है। लिखित रूप में नाटक तैयार करने से अंग्रेज़ी शिक्षा ने सहायता दी।

भारतीय नाट्य साहित्य में मलयालम नाटक की अलग पहचान है। साहित्य गरिमा से आकृष्ठ होकर संस्कृत नाटकों के अनुवाद की पद्धति अपनाते हुए मलयालम नाट्य परंपरा की शुरुआत हुई। 1882 में केरल वर्मा वलियकोयितम्पुरान द्वारा अनूदित'अभिज्ञानशाकुन्तलम' मलयालम का पहला नाटक माना जाता है। इसका

प्रस्तुतीकरण संगीत नाटक कंपनी द्वारा हुआ था। अनूदित मलयालम नाटकों में के सी. केशवपिल्लै का 'सदारामा', टी.सी. अच्चुत मेनोन का 'संगीतनौषध', पी. केलुनायर का ' पाक्कनार चरितम्' आदि उल्लेखनीय हैं। 'संगीत नौषधम' इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसमें नल की भूमिका एक स्त्री ने आदी की। नवजागरण कालीन वातावरण मे रंगमंच में 'कावम्मा' नाम एक स्त्री ने पुरुष की भूमिक आदा की। यह तो अपने आप महत्वपूर्ण है। केरल में इस प्रकार नाटक के लिए रंगशाला तैयार करने का प्रयास संगीत नाटक कंपनी ने किया। "भिन्न - भिन्न जाति एवं उपजातियों में विभाजित केरल के लोगों को एकत्रित करने का कार्य संगीत नाटक कंपनी ने किया। संगीत नाटकों ने ही केरल की जनता के मन में नियमित रूप से नाटक देखने का शौक पैदा किया"[1]।

अगलाचरण 'मरियाम्मानाटकम' का है। प्रकशन वर्ष से लेकर मतभेद तो है। कोच्चीप्पन तरकन का यह नाटक समाजिक सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। यहाँ से सामजिक नाटकों का प्रदुर्भाव शुरू हुआ था। समाज सुधार की दृष्टि से देखा जाय तो एक सशक्त माध्यम है मरियाम्मानाटकम। ईसाई लोगों के बीच प्रचलित अमानवीय शोषण-सास बहू का झगडा इसका मुख्य विषय है। ईसाई धर्म में शादी के बाद लडकी के लिए कोई आश्रय नहीं है। पति का घर ही एकमात्र चारा है। " पिता नहीं माता तो भी नहीं कोई खंभे भी आश्रय नहीं। बस प्रियतम का चरण ही एकमात्र आश्रय है"[2]।यहाँ उस समय के नारी जीवन की त्रासदी का चित्रण है।

नाटक में अनुवाद से ज़्यादा स्थान अनुकरण को है। अनुकरण भी कला का रूप है। सी. वी रामनपिल्लै ने अंग्रेज़ी नाटकों का अनुकरण करके एक अलग अध्याय रचा। सी. वी ने नौ प्रहसनों की रचना की। इसमें प्रमुख तो 'कुरुप्पिल्ला कलरी' है। उनके उपन्यासों में भी नटकीयता अन्तर्लीन है। बाद में ई. वी. कृष्ण पिल्लै का समय है। उनके 'सीतालक्ष्मी', 'राजाकेशवदास' जैसे नाटकों में इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय है।

नाटक और रंगमंचीय प्रस्तुती के सन्दर्भ में श्री कुट्टमत्तु परिवार को याद रखना अनिवर्य है। कुट्टमत्तु के प्रमुख नाटक है 'वेणुगोपाल','हरिशचन्द्र', 'नचिकेतस' आदि। उन्होंने अपने नाटकों के ज़रिए जातिभेद , छुआछूत और वंशाभिमान से जनता कोऊपर उठने का आह्वान दिया। विद्वान केलु नायर के नाटकों में भी व्यवस्था विरोधी स्वर है। केलु नायर समाज के पीडित दलित वर्ग के पक्षधर होना चाहते थे। परिवर्तन की कामना उनके नाटकों में दिखायी

पडती है। सी. पी. श्रीधरन की राय में "केलु नायर के नाटक इस ठोस तथ्य की और संकेत करते हैं कि नाटक और रंगमंच सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं"[3]।

1930 तक आते सफल मलयाल नाटक में एक सकारात्मक परिवर्तन विद्यमान है। बगाल केनवजागरण से प्रभावित होकर केरल में भी जगरण संपन्न हुआ। अय्या वैकुण्ठस्वामी के शिष्य नारायणगुरू और चट्टम्बी स्वामी इसके अगुआ थे। केरल के रंगमंच और नाटक ने जागरण को एक प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार किया। नाटक में समाजिक चेतना का समावेश होने लगा। इस परिवर्तन से मलयालम नाटक को जोडने का कार्य वी. टी भट्टतिरिपाडु , एम. आर. बी , जैसे लोगों ने किया।' अडुक्कलयिल निन्नुम अरंङत्तेक' (रसोई से रंगमंच की ओर) में वी. टी ने और ' मरक्कुडक्कुल्लिले महानरकम'(घूँघट के भीतर का महानरक) में एस. आर. बी ने नम्बूतिरी समाज में व्याप्त अमानवीय स्थितियों का चित्रण किया। यह नाटक में सामजिक दृष्टि से देखा जाय तो युवालोगों की स्थिति, बहुविवाह प्रथा, स्त्रियों की स्थिति जैसे त्रासदपूर्ण परिवेश का दस्तावेज है। सुधारवादी दृष्टि से देखाजाय तो वी. टी और एम. आर. बी महत्वपूर्ण है। ई. एम. एस .की राय में "वी. टी का नाटक रूढिवादी समाज पर फेंका गया पत्थर बना था"[4]। 'तोषिल केन्द्रत्तिलेक्कु' (कार्यशाला की ओर) शीर्षक नाटक नम्बूतिरी समाज में व्यापत स्त्री शोषण का बयान है। इसमें स्त्रियों को शिक्षा ग्रहण करना और नौकरी पेशा नारी बनने की प्रेरणा दी जाती हैं अथवा स्त्रियों में स्वावलंबन कीभावना जगाने में यह समर्थ सिद्ध हुआ। उस समय नम्बूतिरि स्त्रियों की बिक्री की जाती थी।इस प्रथा की आलोचना नाटक में प्राप्त है।

जागरण के बाद प्रगतिशील विचारधारा का युग है। राष्ट्रीय आन्दोलन के फलस्वरूप सत्ता के खिलाफ आवाज़ उठाने की प्रवृत्ति जनता में व्याप्त हो गयी। 1930 में रचित के. दामोदरन का 'पाट्टबाकी' मलयालम का पहला राजनैतिक नाटक है। ज़मीनदारी प्रथा, किसानों का शोषण,मजदूरी करनेवाले लोगों की त्रासदी आदी इसके मुख्य विषय हैं। भूख के कारण चेरी करने केलिए विवश 'किट्टुण्णी' और बेसहारा होने पर शारीर बेचने के लिए विवश'कुंजिमालु' सामाजिक असमानता और आर्थिक असमानता का नमूना है। रचना और कथावस्तु की दृष्टि से देखा जाय तो इस प्रकार के नाटक केरल के सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में आए प्रगतिशील परिवर्तन को द्योतित करते हैं।

इब्सन के प्रभाव से मलयालम नाटक को परिचित करने का कार्य सी.जे. थोमस ने किया। अपने असधारण व्यक्तित्व और मौलिक रचनात्मकता के कारण सी. जे. के नाटकों ने मलयालम नाटक साहित्य एक नया मोड उपस्थित किया। सी. जे. ने कहा कि " यदि भविष्य में कुछ बनना चाहूँगा तो में अवश्य निर्देशक की भूमिका का चयन करूँगा।काश शेक्सपियर और इब्सन के समान नाट्यशाल के प्रबन्धक की नौकरी और आजीवन रंगकर्म में लगे रहने का मौका मिलता तो कितना अच्छा होता"[5]। रचनाक्रम की दृष्टि से देखा जाय तो ' अवन वीण्डुम वन्नु' (वह फिर भी आया) उनका पहला नाटक है। द्वितीय महासमरोत्तर की अव्यवस्थित मानसिकता इस नाटक का केन्द्र बिन्दु है। नाटककार ने बदलते हुआ परिवारिक संन्दर्भों का चित्रण 'साराम्मा', 'मात्तुकुट्टि' और 'कुंञुवर्की' के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस नटक में परिवेश अपने आप महत्वपूर्ण है। माँ- बेटा, पति- पत्नी, पत्नी और प्रेमी इन संबन्धों में आये हुए बदलाब को रेखांकित करने में नाटककार सफल है। इन पात्रों का मानसिक संघर्ष भी मुख्य है। 'आ मनुष्यन नी तन्ने' (वह आदमी तुम ही है) में बैबिल की कहानी का चित्रण है।इस नाटक में दावूद कहता है कि " मैं तुम्हारे पास एक वीर या गायक होकर नहीं आया हूँ। एक पुरुष होकर एक औरत के प्रेम के लिए तरसनेवाल पुरुष होकर आया हूँ । भूत और भविष्य के बारे मे सोचे बिना हम आज जिएँगे। हमारे बस में तो सिर्फ आज है। मैं जोर्दान नदी के समान बहना चाहूँगा, स्वतंत्र होकर शक्ति के साथ"[6]।

मलयालम नाटक और रंगमंच में के. पी. ए. सी. एक परिवर्तन का सूचक है। इसकी मूल प्रेरणा तो इप्टा से थी। तोप्पिल भासि ने के. पी. ए. सी. लिए नाटक लिखा। राजनीति के क्षेत्र में काम करते हुए वे साहित्य के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। इसलिए वे देशा की राजनैतिक और सामजिक परिस्थितियों से अवगत थे। मार्क्सवादी विचारधारा का स्वर उनके नाटकों में मुखरित है। उनके प्रमुख नाटक हैं -'निङ्लेन्ने कम्युनिस्टाक्की'(तुमने मुझे कम्यूनिस्ट बनाया), 'मूलधनम' , 'मुडियनाय पुत्रन'(धूर्त पुत्र), 'कूट्टुकुटुम्बम'(संयुक्त परिवार) आदि।' निङ्लेन्ने कम्युनिस्टाक्की'(तुमने मुझे कम्यूनिस्ट बनाया) भासी का प्रथम नाटक है। समसामयिक राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन की जीवंत समस्यायें इसका विषय हैं। इस संदर्भ में पी. जे. एंटणी को भी याद करना जरूरी है। उनके 'इंक्विलाबिन्टे मक्कल' , 'ञङ्लुडे मण्ण'(हमारी मिट्टी) , जैसे नाटक चर्चित हैं। 'इंक्विलाबिन्टे मक्कल' में समाज कीआर्थिक असमानता एक मुख्य विषय है। आर्थिक स्वतंत्रता अब भी उपलब्ध नहीं है ।

युग परिवर्तन के अनुसार नाटक में भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इस सन्दर्भ में के.टी. मुहम्मद का नाम उल्लेखनीय है। मुहम्मद ने इस्लाम समाज में व्याप्त अमानवीय स्थितियों का चित्रण किया। उनके प्रमुख नाटक हैं -' मनुष्यन काराग्रहत्तिलाणु'(मानव बन्दीघर में), 'पुतिय वीड्'(नयाघर)।

स्वातंत्र्योत्तर समय में मलयालम रंगमंच में बहुआयामी प्रवृत्तियों का विकास हुआ। एन. एन. पिल्लै ने इस समय 'विशव केरल कला समिति' की स्थापना की। नाटक और रंगमंच के प्रति समर्पित नटककारों का योग्दान अनोखा है। निर्देशक एवं अभिनेता,तथा रंगकर्मी होने के कारण नाट्य जगत को परिवर्द्धित करना आसान है। शिल्प की दृष्टि से नवीनता उभर कर आयी। सी. एन. श्रीकण्ठन नायर, वयला वासुदेवन नायर,टी. एम. अब्राहाम , पी. एस. ताज आदि नाटकारों ने रंगमंच को नवीनता जोडा था। इसमें सी. एन. श्रीकण्ठन नायर का 'काँचन सीता' में नयापन है। यह रामकथा ही नहीं मानव राम की कहानी है। नाटकार ने 'साकेतम' और लंका लक्ष्मी में भी इस तरह नवीनता को दर्शाया है। मलयालम रंगमंच में कावालम नारयण पणिक्कर का नाम भी विशेषतः ध्यातव्य है। उनके कावालम नाटक रंगमंच में नवीन प्रयोग है।

केरल का रंगमंच अपने आप समृद्ध है। मलयालम नाटकारों ने मुख्य रूप से रंगमंच के लिए नाटक लिखा। केरल में सामाजिक जीवन में और सांस्कृतिक धरातल में जो प्रगति विद्यमान है इसके पीछे यहाँ के नाटकारों का योगदान ही है। अंधकारपूर्ण भूतकाल से, जाति - उपजाति के बीच में मौजूद छोआछूत को दूर करने में, ज़मीनदारी प्रथा को खत्म करने में इन नाटकारों ने महत्वपूर्ण भूमिक आदा की। नए-नए रंगमंचीय प्रयोग से केरल में समकालीन सन्दर्भ में अनेक रंगकर्मी सक्रिय हैं। उनमें स्त्रियों का योगदान भी विचारणीय है। भारतीय रंगमंच को विविधता प्रदान करने में केरल की सांस्कृतिक, भौगोलिक,एवं जलवायु पर निर्मित नाट्यरूप सहायक निकल आती है ।इस प्रकार नवजागरण के प्रभाव को रंगमंच के माध्यम से लोंगों तक पहूचाने में केरल का रंगमंच सफल है।

सन्दर्भ :

1.काट्टुमाडम नारायणन: मलयालनाटक प्रस्थानम्,एन .बी.एस प्रकाशन ,कोट्टयम, प्रकाशन वर्ष -1965, पृ-103

2.कोच्चीप्पन तरकन : मरियाम्मानाटकम् , मलयालम प्रकाशन ,कोच्ची , प्रकाशन वर्ष -1946, अरंङ-5

3.सी.पी. श्रीधरन(सं) : विद्वान केलुनायर की रचनाएँ, एन. बी.एस प्रकाशन, कोट्टयम , प्रकाशन वर्ष -1965,पृ- 3

4.संस्कार केरल : ज़ुलाई-सितंबर 1994, पृ-5

5. काट्टुमाडम नारायणन : मलयालनाटकप्रस्थानम् , एन .बी.एस प्रकाशन ,कोट्टयम, प्रकाशन वर्ष -1965, पृ- 154

6. सी.जे. थोमस: उयरुन्न यवनिका, एन .बी.एस प्रकाशन ,कोट्टयम, प्रकाशन वर्ष -1955 पृ -36